Dr. Priti Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Deptt of History
B.A Part-II
Paper-III
Topic - Chola Empire. (Part-II)

पांड्यों और चेरों की शक्ति को दबाये रखने के उद्देश्य से राजराज प्रथम कुर्ग तक अपनी विजयवाहिनी ले गया। सन् 991 से 1004 ई० तक के बीच में उसने गंगवाड़ी तथा मैसूर के अन्य प्रांतों को विजित कर लिया। पश्चिमी चालुक्य नरेश सत्याश्रय को राजराज के द्वारा गहरी पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इस युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् राजराज ने रट्टपाड़ी पर अधिकार कर लिया और चालुक्य देश को रौंद डाला तुंगभद्रा नदी चोल साम्राज्य की सीमा बन गई।

राजराज ने वेंगी के पूर्वी चालुक्यों की राजनीति में हस्तक्षेप किया। उसने अम्मी उनकी पारस्परिक कलहों का अंत करके उनके साथ मैत्री स्थापित कर ली। इस मैत्री के स्मारक में राजराज प्रथम ने अपनी पुत्री कुन्दवै का विवाह विमलादित्य (वेंगी नरेश) के साथ कर दिया। अपने राजत्व काल के अंतिम हिस्से में राजराज प्रथम ने लक्का दीव और मालदीव के द्वीप समूहों को विजित किया। इन द्वीप समूह की विजय से यह स्पष्टतया प्रमाणित है कि राजराज प्रथम ने चोलों का एक जहाजी बेड़ा संगठित किया था। सुमात्रा के श्री विजय साम्राज्य के सम्राट मारविजयोत्तुंगवर्मन के साथ राजराज प्रथम का मैत्री सम्बन्ध था और उसने उसको नागपट्टम में एक बौद्ध विहार बनाने की आज्ञा दे दी।

अपनी विजयों के फलस्वरूप राजराज प्रथम सम्पूर्ण वर्तमान मद्रास प्रांत कुर्ग मैसूर और सिंहल के अनेक द्वीपों का स्वामी बन गया। इन सैन्य सफलताओं को ध्यान में रखते हुए राजराज प्रथम को प्राचीन भारत के महान योद्धाओं महान विजेताओं और साम्राज्य निर्माताओं की पंक्ति में गौरवपूर्ण स्थान देना चाहिये।

राजराज प्रथम का सुयोग्य पुत्र राजेन्द्र उसके पश्चात नृपति हुआ। उसने पिता के शासन-काल में सहायता की थी। कल्याणी के चालुक्य-नरेश सत्याश्रय पर चोलों को जो सफलता प्राप्त हुई थी, उसका श्रेय राजेन्द्र-प्रथम को दिया जा सकता है। राजराज-प्रथम ने पाण्ड्य नरेश के विरुद्ध जो युद्ध किया उसके परिणामस्वरूप वह केवल उत्तरी लंका का ही स्वामी हो सका, किन्तु राजेन्द्र-प्रथम ने सिंहल के नरेश से उसका राजदण्ड छीन लिया और उसके देश को विजित कर लिया। उसी वर्ष राजेन्द्र-प्रथम ने चेर शासक के ऊपर भी विजय प्राप्त की। उसने चेर और पाण्ड्य प्रदेशों का एक ही समय शासन-विभाग बनाकर वहाँ पर चोलवंश के एक शासक को नियुक्त कर दिया। इस प्रान्तीय शासक को 'चोल-पाण्ड्य' की उपाधि दी गई। और मदुरा में उसकी राजधानी स्थापित की गई। राजेन्द्र-प्रथम के समय में लक्कादीप और मालदीव पर चोलों का अधिकार बना रहा। कल्याणी के जयसिंह-द्वितीय को मुसन्गी के निकट राजेन्द्र-प्रथम के हाथों-पराजय स्वीकार करनी पड़ी, परन्तु उसने रायचूर दोआब को फिर से जीत लिया और तुंगभद्रा नदी तक उसने अपना प्रभाव जमा लिया।

राजेन्द्र प्रथम गंगैकोण्ड की महत्वपूर्ण उसकी इन उपर्युक्त विजयों से शांत न हो सकी। सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में वही ऐसा अकेला शासक था जिसने भारत की सीमा के बाहर जलमार्गों और बंगाल की खाड़ी में अपने जहाजी बेड़े का प्रयोग किया। राजेन्द्र प्रथम को अपने शासन काल के अंतिम में आंतरिक विप्लवों का सामना करना पड़ा था। राजेन्द्र प्रथम के वृहत्तर भारत रण-अभियान के पश्चात लंका ने अपनी स्वतंत्रता का बिगुल बजाया। पाण्ड्य और केरल राज्यों ने भी बगावत

कर दी किन्तु राजेन्द्र-प्रथम के पुत्र राजाधिराज-प्रथम ने इस विद्रोह का सफलतापूर्वक दमन कर दिया। पश्चिमी चालुक्य नरेश सोमेश्वर-प्रथम आहवमल्ल के विरुद्ध भी राजाधिराज प्रथम को सफलता प्राप्त हुई। इस आक्रमण में चोल सेना ने कल्याणी को खूब लूटा खसोटा। मैसूर आदि स्थानों में भी कुछ छोटे-मोटे आक्रमण किये गये। राजेन्द्र प्रथम की मृत्यु १०१२ ई० में हुई।

इस बात का उल्लेख किया जा चुका है कि चोल नृपति अपने साम्राज्य का दौरा किया करते थे जिससे शासन-व्यवस्था शिथिल नहीं होने पाती थी। वैसे सैद्धान्तिक रूप में सम्राट की शक्ति पर कोई नियन्त्रण नहीं था, किन्तु उसे स्थानीय नियमों और परम्पराओं का ध्यान रखना पड़ता था।